" कैरियर की नई राहें "

छात्रों को हाईस्कूल के बाद ही यह निर्णय करना होता है, कि उन्हें आगे भविष्य में कौन-सा विषय, कौन-सी राह चुननी है। मसलन गणित, बायलॉजी, कामर्स, फाइन आर्टस, आदि। उस समय वह छात्र किशोरावस्था से युवावस्था की वयः संधि पर होता है। यही वह महत्वपूर्ण समय है जब उसका शारीरिक, मानसिक और सांवेगिक विकास बहुत ही तीव्र गति से होता है। इसी वक्त ही उसे अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमता का सही आंकलन करना होता है। इस किशोरावस्था की अवस्था में, विषय के चयन का उसके भविष्य पर गहरा असर पड़ता है। हालांकि विद्दार्थी हमेशा नहीं जान पाता, कि उसकी वास्तविक रूचियां क्या है, उसकी वास्तविक अभिवृत्रि (एट्रीट्यूट) किस क्षेत्र में ज्यादा है ?

इसकी एक प्रमुख वजह यह है, कि कैरियर के चुनाव में छात्रों पर हमेशा से अपने माता-पिता की आंकाक्षाओ,इच्छाओं का दबाव, मित्रों का साथ रहने का लालच और देश की अर्थव्यवस्था के अनुसार मौजूद रोजगार या अवसरों का भी आकर्षण होता है। यही कारण है कि आज भी अधिकांश पालकों में अपने बच्चों को इंजीनियर या डाक्टर बनाने का ही आकर्षण पाया जाता है। इसके लिए वे यह भी नही देखते कि उनके बच्चों में वह अभिरूचि या योग्यता है या नही ? नतीजा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल नही होने के बाद, अधिकांश छात्रों में तनाव और हताशा की भावना आ जाती है। वे छात्र जो दसवीं में औसत प्रतिशत ला पाते हैं, गणित या विज्ञान विषय ना मिलने पर तनाव की स्थिति से गुजरने लगते हैं। वे छात्र-छात्राएं जो दसवी की परीक्षा में औसत प्रतिशत लाते हैं वे याद रखें कि उन्होंने कुछ भी नही खाया है। इंजीनियरिग और मेडीकल के अलावा अब हमारे देश में इतने विकल्प मौजूद हैं कि जिसके लिए वो अगर कक्षा ग्यारहवी से ही सही ढंग से योजना बनाकर तैयारी करेंगे तो निः संदेह उनका भविष्य बहुत ही उज्जवल होगा।

देश में अपार आर्थिक नीतियों और वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में कैरियर निर्माण के प्रति हमें अपनी सोंच बदलनें की जरूरत है। अब कई ऐसे विषयों और पाठ्यकमों की शुरूआत बारहवीं के बाद देखने आ रही है,

जो अब तक स्नातक स्तर के बाद ही उपलब्ध हुआ करता था। अदाहरण के लिए लॉ, में मैनेजमेंट, (इन्टीग्रेटेड कोर्स) ,चार्टड एकांउटेसी, एम.सी.ए. (इन्टीग्रेटेड कोर्से) आदि। इसके अलावा बैचलर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (बी.बी.एम.) , बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (बी.सी.ए.),बैचलर आफ हॉटल मैनेजमेंट(बी.एच.एम.),बैचलर इन स्पीच एण्ड आक्यूपेशनल थैरेपी, आदि कितने ही नए प्रोफेशनल कोर्स है, जिनके प्रति छात्रों का रूझान बढा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत ही तेजी से तरक्की कर रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने के बाद कारपोरेट सेक्टर में रोजगार के अवसर बहुत ही तेजी बढ़े हैं। विज्ञान का छात्र एस्ट्रोनामी, जेनेटिक इंजीनियर, माइक्रोबायलाजिस्ट, फारेस्ट्री, सांख्यिकी, मेडीकल टेक्नॉलाजी में जा सकता है। वहीं परंपरागत इंजीनियरिंग क्षेत्र के अलावा ऐरोनौटिकल, एयरोस्पेस, एन्वार्यमेंटल आदि शाखाओं में जा सकते हैं। वही भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, गणित लेकर विषय के साथ बारहवीं उत्तीर्ण छात्र मर्चेंटनेवी, जियोलॉजी,पायलेट,आर्किटेक्चर के क्षेत्र में भी जा सकता है।

आर्टस का छात्र लॉ, पत्रकारिता,फैशन, डिजायनिंग, टूरिज्म,फाइन आर्टस भाषा और टीचिंग में तो जा ही सकता है, साथ- साथ सिविल सर्विसेज की भी तैयारी कर सकता है, और गणित के साथ कामर्स लेने वाला छात्र लॉ,चार्टड एकाउंटेसी,कंपनी सचिव, बैकिंग, बी.बी.ए.,बी.बी.ई .,सी.एफ.ए.आदि क्षेत्रों के लिए शुरूआत से ही तैयारी कर सकते है।

आशय यह है कि अगर छात्र की इच्छा आगे पंरापरागत क्षेत्र में जाने कि नही है तो वे सही ढंग से ग्यारहवी में ही तैयारी कर इन गैरपरंपरागत क्षेत्रो में जा सकता है और अपनी मंजिल को पा सकता है।

श्रीमती वर्षा अजीत वरवंडकर
मनोवैज्ञानिक सलाहकार
एफ.एस.मेनेजमेंट ई.प्रा.लि.
मारूति विहार ,मोहबा बाजार
जी.ई.रोड़, रायपुर छ.ग.
Email – consult@fsindia.in